**Indian J. Soc &.Pol. 1(1):47-48:2014** **ISSN : 2348-0084**

# मातृभूमि, माटी और संस्कृति के शीर्ष साधकः डॉ कुबेर नाथ राय

**प्रमोद कुमार श्रीवास्तव**[1]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, स्वामी सहजानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, उ0प्र0, भारत

## पूर्वपीठिका

***आर्येतर भारत, गंगातीरी लोक जीवन, रामकथा, भारतीय साहित्य, गांधी दर्शन आदि को अपने ललित–निबन्ध की विषय– वस्तु बनाकर निंबधकार कुबेरनाथ राय ने अपने सर्जनशक्ति से दुनिया को परिचित कराया। भारतीयता और वैदिक परम्पराओं की गहराई में गोता लगा–लगाकर आपने दीर्घकाल से विद्यमान वैदिक समाज को छन्दोबद्ध समाज बताया और उसके राग– रागनियों को जन–सुर से सजाया। देशी प्रज्ञा की जमीन पर बैठकर, युगचेतना का आहरण कर अस्मिता की दिव्यशक्ति से भारतीय मनीषा की पहचान कराते हुए श्री राय ने सामूहिक अस्मिता की रक्षा की। मनुष्य, पृथ्वी और ईश्वर को एक अविभाजित त्रिक के रूप में देखते हुए ईश्वर को उन्होंने संस्कार– साधना माना है जिसे व्यवहार में उन्होंने धर्म और संस्कृति स्वीकार किया है।***

भारत' को 'भारतीय मनुष्य, भारतीय धरती और भारतीय संस्कार साधना के त्रिक के रूप में उन्होंने स्वीकार किया है (राय,पृ37) और इसी भारत और उसकी विश्व–प्रसिद्ध संस्कृति की आजीवन कलात्मक रक्षा की। आपने आर्य और आर्येत्तर संस्कृति का कुशल अध्ययन ही नहीं किया बल्कि अपने सांस्कृतिक पहचान शक्ति से विश्व मानस पर अमिट छाप छोड़ी। यह केवल अपनी माटी के प्रति महान आदर का ही नहीं बल्कि संस्कृति गौरव–बोंध और परम्पराओं को आगे बढ़ाने का आत्मविश्वास भी है। इस ललित निबंधकार का भारतीय सांस्कृतिक इतिहास और मानवीय मूल्यादर्श की पुनःपहचान अत्यन्त प्रंशसनीय ही बल्कि अनुकरणीय भी है।

एक साधक की तरह आप साहित्य साधना में जीवन–प्रर्यन्त लगे रहे, इस निबधकार ने सांस्कृतिक गवेषणा की मानो ठान ली थी। एक अभावग्रस्त सवर्ण किसान परिवार में जन्मे इस सर्जक ने जमीन से जुड़ाव कभी कम नहीं की और परम्पराओं के प्रति जागरूक रहे। डॉ0 विद्यानिवास मिश्र ने भी स्वीकारा की, ''उनके निबन्ध सांस्कृतिक गवेषणा और लालित्य चेतना के अद्भुत संगम हैं। उन्हें पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि जैसे हम सभ्यता की खोज यात्रा से गुजर रहे हों।''(नवभारत टाइम्स) सही बात है गंगातीरी लोक जीवन पर जितनी आधिकारिक लेखनी स्व0 राय ने चलाई है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है । निषाद संस्कृति पर शोधपरक ललित निबंध लिखकर आपने उस संस्कृति से लोगों को जोड़ा और इन सभी गंगातीरी भूली–बिसरी लोकनिधियों कस सहज भाव से गंग्रह कम से कम लोक–संस्कृति के नाम पर लोक शिल्पियों को सजग भी कर जाता है, ''इसी से तो मैं बार–बार कहता हूँ भारतीय इतिहास और लोक–संस्कृति, लोक–धर्म और लोक भाषा का महत्तम सामपवर्तक (हायस्ट कॉमन फैक्टर) 'निषाद' अर्थात कोल या ऑस्ट्रिक है, आर्य नहीं।''(राय,पृ67) उनकी जन्मभूमि मतसा गांव, गंगा किनारे पर बसा गाजीपुर जनपद का एक गांव है। इसलिए गंगातीरीन लोक जीवन के विभिन्न जातियों–समूहों की भी अपनी लेखन सामग्री का आधार बनाया और सिद्ध किया कि भारतीयता केवल आर्य परम्परा का ही नहीं बल्कि विभिन्न धाराओं औार समूहों की देन है। निबंधकार का समूचा दृष्टिकोण सांस्कृतिक तो है ही, वे ' संस्कृति की आधारभूमि है गांव' ही स्वीकारतें भी है। उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि लोक–संस्कृति का नाम ही कृषक संस्कृति है (राय,पृ 200) निश्चित रूप सें सांस्कृतिक जीवन मूल्य ही उनकी लेखनी का विषय–वस्तु है।

भारतीय संस्कृति–शोध क्रम में उन्होंने स्वीकार किया है कि भारतीय आर्य वस्तुतः 'नव्यआर्य' हैं जिसकी रचना इतिहास–विधाता ने चार तत्वों– आर्य–द्रविण–निषाद –किरात से की है, और दूसरी बात यह कि जिसे हम आज भारतीय संस्कृति कहते हैं वह आर्य और आर्येतर दोनों की संयुक्तनिधि (कामनवेल्य) है और इसकी संरचना में हमारे आर्येतर पितरों का भी समान योगदान है।(राय,पृ159) इस देश की विशिष्ट पहचान आर्य और आर्येतर संस्कृतियों के समन्वित रूप से है जो वास्तव में अद्वितीय है, अतुलनीय है और इसी के साथ अनोखी भी। पूर्णकालिक ललित निबन्धकार के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाये रखने में राय साहब नें कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से अपने को समृद्ध रखा तथा समाज को पढ़ते हुए उसके मूल संस्कृति के प्रति सदैव शोधार्थी बने रहे । आपके निबंधों में भारतीय संस्कृति के प्रति गहरी आस्था देखी जा सकती है, जो केवल भारतीय सीमा में बंधी हुई नहीं बल्कि सम्पूर्ण धरती पर विद्यमान दिखाई देती है, ''हमारी बाहरी सभ्यता में सिंधुघाटी के अवशेष आज भी हैं परन्तु भारत का अन्तर्मन निरन्तर साधनारत रहा है और भारत ने अन्तर्विकासित संस्कृति का माप तैयार किया है। क्योंकि हमने आर्थिक कारण को ही सब कुछ नहीं माना।(राय,पृ119) पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण में हम अपनी सांस्कृतिक

*1: Corresponding Author*

गौरव को भूलते जा रहे हैं। हमारा ग्राम जीवन संस्कारों के पैमाने पर पला–बढ़ा और दुनिया में भारत को विश्वगुरू के रूप में पहचान दी पर अब बाजार की चकाचौंध में हम बनावटीपन में बहते जा रहे हैं। ऐसे में अपने मूल और अतीत की गरिमामण्डित परम्परा की पहचान कराने में और उस ओर बड़े प्यार से लेकर पार तक जाने में कुबेर के निषाद दक्ष जान पड़ते हैं।

परिवेश और परम्परा को जिस प्रकार जोड़ते हुए माटी और राष्ट्र के प्रति श्रद्धाभाव जगाने का कार्य कुबेरनाथ करते हैं वैसा अन्य कहीं भी दुर्लभ है। अपने पौराणिक मिथकों और पात्रों के माध्यम से चरित्र और आचरण का ऐसा मानक तैयार करते हैं कि भारत का आकर्षक रूप अपने पूरे वैभव के साथ सामने आ जाता है, ''राम चाहे जो हों पर रामत्व विवादों से परे सनातन सत्य है जैसे तथ्य को हदृयंगम किया जा सकता है। हमारे देवी–देवताओं का, उत्सवों का व्यक्तित्व और स्वरूप पर्त–दर–पर्त बहु–पतली और बहुरूपी है। इसीलिए कवि–रचनाकार भी एक शीर्ष नहीं, सहस्रशीर्ष हैं। बिना अपने अन्तराल में विश्वमन की उपलब्धि किये कोई भी श्रेष्ठ शिल्पी या साहित्यकार नहीं हो सकता।(राय,पृ85)

कुबेरनाथ राय भाव को महत्वपूर्ण और यथार्थ को साहित्य का विषय मानते है, 'भीड़ और आत्मप्रशंसा' को दुत्कारते हैं परन्तु सच्चाई और अनुभव को स्वीकारते हैं। 'रस आखेटक' स्व0 राय लोक शब्दों का चयन बड़ी खूबी से करते हैं, इसीलिए वे लोक मानस के सबसे करीबी कवि गोस्वामी तुलसी की चर्चा और प्रयोग खूब करते हैं। आपको विरासत में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक–बोध सम्पन्न मस्तिष्क मिला था, इसीलिए सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भारत में टूटते मर्यादा और नैतिक मूल्यों की कसक उनके मन को बराबर आहत करती रही। उनका वैष्णव संस्कार विषम युगीन परिवेश में भी सबल बनी रही इसीलिए क्षरित होते विश्वास–मूल्य को सम्बर्धन करने हेतु उन्होंने जमकर सर्जना की और संस्कृति के विविध पक्षों की अन्वेषक–गर्जना की। निश्चित रूप से ''वह हिन्दी निबन्ध के उस शिखर पर आरोहण करता गया जिसके बाद कई बार लगा कि राह है ही नहीं। लेकिन अगले ही निबंध में राह फिर फूटती हुई दिखाई देने लगती।(गुप्ता,1996,पृ60)लोकमंगल के लिए उनकी साहित्यिक साधना हिन्दी ललित निबंध और भारतीयता दोनों के लिए अर्श तक पहुंची दीख पड़ती है, उनके निबंधों में लोक जीवन की आनुभूतिक गहराई और चिन्तन का विस्तार देखते ही बनता है।

वस्तुतः मातृभूमि, जन्मभूमि, माटी और संस्कृति के प्रति जैसा गहरा लगाव कुबेरनाथ की अन्यतम कृतियों में मिलता है वैसा शायद ही कहीं सम्भव है। संस्कृतियों के समन्वय की विराट भावना ने उन्हें बेजोड़ बना दिया है। शिवदर्शन से प्रभावित श्री राय का लोकसुख हेतु सारतत्व प्रदान करने का प्रण था सो किया, विषम परिस्थितियों के बीच भी निडर–निर्भय, ''शिव तो नीलकंठ के नाम से विख्यात है ही। मेरी कल्पना, मेरी प्रतिभा भी विषपायी नीलकंठी है। दुःख या उल्लास के भीतर के जहर को खींचकर यह स्वयं श्यामकंठ हो जाती है और धरती को जो कुछ देती है वह शुद्ध प्राण और रस रहता है।(राय,पृ0172,173) वे पाठकों का केवल मनोरंजन न कर बल्कि बौद्धिक स्तर पर उन्हें संतुष्ट भी करना चाहते थे, ''निबंध का मौलिक उद्देश्य चाहे वह ललित निबन्ध ही क्यो न हो, पाठकों को मानसिक ऋद्धि अर्थात उनके बौद्धिक क्षितिज का विस्तार करना है।वे धर्म और राजनीति का उद्देश्य केवल मानवता के पक्ष में स्वीकारते हैं और सहिष्णुता का पक्ष ग्रहण करते हैं, ''धर्म–निरपेक्षता का व्यावहारिक अर्थ है धर्म भी कट्टरता से मुक्त चिंतन और परम सहिष्णुता।कुल मिलाकर गॉव के माटी के इस लाल में गंवई संवेदना की छौंक और गंध बराबर विद्यमान रही जी करूणा, दया, सहानुभूति सद्भाव और सहिष्णुता के बीच रची बसी है और वही भारतीयता है।

**सन्दर्भ**


राय, कुबेर नाथ :मेरे लेखन के केन्द्रीय तत्व– *'निवेदिता'* विशेषांक

*नव भारत टाइम्स*, दिनांक– 23.11.1993

राय, कुबेरनाथः *निषाद बांसुरी*

राय, कुबेरनाथ :*विषाद योग,*

राय, कुबेरनाथः *मराल,*

राय, कुबेरनाथ : *कामधेनु*

गुप्त, कृष्ण चन्द : *'धर्मयुग'*, अगस्त 1996

राय, कुबेरनाथः *प्रिया नीलकंठी,*

*नवभारत टाईम्स*,साक्षात्कार के अंश, 27.11.1993